بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ

دفتر مجلس انصار اللہ بھارت

Office Of The Majlis Ansarullah Bharat

Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

Mob.9682536974,E-Mail: ansarullah@qadian.in KhulasaKhutba-02.02.2024 محلہ احمدیہ قادیان ۱۴۳۵۱۶ ضلع: گورداسپور (پنجاب)

युद्ध की परिस्थितियों एवं घटनाओं का वर्णन तथा विश्व युद्ध से बचने के लिए दुआ की तहरीक।

सारांश ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, बयान फ़र्मूदा 02 फ़रवरी 2024, स्थान मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद यू. के.।

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللّٰہ من الشیطٰن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعَالَمِیۡنَ ۔ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ۔ مٰلِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ ۔ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَاِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ ۔ اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ ۔ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ وَلَا الضَّآلِّیۡنَ۔

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- ओहद की लड़ाई के समय की घटनाओं में सहाबा रज़ी. के बलिदानों तथा उनके इश्क़े रसूल स. के उदाहरण मैंने दिए थे इनमें हज़रत अली रज़ी. के शौर्य की घटनाओं का वर्णन भी मिलता है। अतएव रिवायतों में आता है कि ओहद की लड़ाई के अवसर पर इब्ने क़मियः ने हज़रत मुस्अब बिन उमैर रज़ी. को शहीद करके समझा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को शहीद कर दिया, तथा क़ुरैश को कहा कि मैंने मुहम्मद स. की हत्या कर दी है।

हज़रत मुस्अब रज़ी. के शहोद होने के बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने झंडा हज़रत अली रज़ी. को दे दिया जिन्होंने एक के बाद एक काफ़िरों के झंडा वाहकों का वध किया। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के निर्देश पर हज़रत अली रज़ी. ने काफ़िरों में से उमरू बिन अब्दुल्लाह जमही तथा शीबा बिन मालिक की हत्या कर दी। जिबरईल अलै. ने हज़रत अली रज़ी. के विषय में कहा कि या रसूलुल्लाह स! निश्चय ही ये सहानुभूति के पात्र हैं तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया- हाँ, अली मुझसे है और मैं अली से हूँ, तो जिबरईल अलै. ने कहा कि मैं आप दोनों में से हूँ। इस बात को शीअः हज़रात मुबालग़ा आराई (अतिश्योक्ति) करके बात अत्यधिक बढ़ा चढ़ा भी लेते हैं।

हज़रत अली रज़ी. बयान करते हैं कि ओहद के युद्ध में जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास से लोग हट गए तो मैंने शहीदों के शवों में देखना शुरु किया तो उनमें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को न पाया, तब मैंने कहा कि ख़ुदा की क़सम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु

अलैहि वसल्लम न भागने वाले थे और न ही मैंने आप स. को शहीदों में पाया है, परन्तु अल्लाह हमसे नाराज़ हुआ और उसने अपने नबी को उठा लिया है। अतः अब मेरे लिए भलाई यही है कि मैं लड़ूँ यहाँ तक कि मारा जाऊँ। हज़रत अली रज़ी. कहते हैं कि फिर मैंने अपनी तलवार की मियान तोड़ डाली तथा काफ़िरों पर हमला किया। वे इधर उधर बिखर गए तो क्या देखता हूँ कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उनके बीच में हैं।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. बयान फ़रमाते हैं कि हज़रत अली रज़ी. ने ओहद से वापस आकर हज़रत फ़ातमा रज़ी. को अपनी तलवार धोने के लिए देते हुए कहा कि आज इस तलवार ने बड़ा काम किया है। रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह सुनकर फ़रमाया- अली! तुम्हारी ही तलवार ने काम नहीं किया। फिर आप स. ने छः सात सहाबियों का नाम लेते हुए फ़रमाया कि उनकी तलवारों ने भी जौहर दिखाए हैं।

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ी. ने सीरत ख़ातमुन्नबिय्यीन स. में हज़रत अबू तलहा अन्सारी रज़ी. के बारे में लिखा है कि उन्होंने तीर चलाते चलाते तीन कमानें तोड़ीं तथा दुशमन के तीरों के सामने सीना तान कर आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के शरीर को अपनी ढाल से छिपाया।

हज़रत सअद बिन वक़्क़ास रज़ी. को आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम स्वयं तीर पकड़ाते और हज़रत सअद रज़ी. ये तीर दुशमन पर निरन्तर चलाते जाते थे। एक बार आप स. ने हज़रत सअद रज़ी. से फ़रमाया- तुम पर मेरे माँ-बाप क़ुर्बान हों, निरन्तर तीर चलात जाओ। हज़रत सअद रज़ी. अपनी अन्तिम आयु तक इन शब्दों को अति गर्व के साथ बयान किया करते थे।

अबू दजाना रज़ी. ने बड़ी देर तक आप स. के शरीर को अपने शरीर से छिपाए रखा और तीर या पत्थर आता था उसे अपने शरीर पर लेते थे, यहाँ तक कि उनका शरीर तीरों से छलनी हो गया।

फिर हज़रत सहल बिन हनीफ़ रज़ी. हैं, ये भी महामान्य सहाबियों में से थे जो ओहद के दिन दृढ़ता पूर्वक जमे रहे। उस दिन उन्होंने मौत पर आँहुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बैअत की थी। आप उस समय आँहुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आगे ढाल बन कर डटे रहे।

फिर हज़रत उम्मे अम्मारा रज़ी. का भी वर्णन मिलता है जिन्होंने बहादुरी के जौहर दिखाए। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनके बारे में फ़रमाया कि ओहद के युद्ध वाले दिन दाँए तथा बाएँ, मैं जिधर भी देखता था इनको देखता था कि मेरी सुरक्षा के लिए दुशमन से लड़ रही हैं।

युद्ध में अबू सुफ़यान के साथ संवाद का वर्णन मिलता है तथा क़ुरैश किस तरह वापस हुए।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़ख़्मी होकर बेहोश होने तथा उसके बाद की घटना का वर्णन करते हुए फ़रमाते हैं कि थोड़ी देर बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को होश आ गया तथा सहाबियों ने चारों ओर मैदान में आदमी दौड़ा दिए कि मुसलमान फिर एकत्र हो जाएँ। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उन्हें लेकर पहाड़ के दामन में चले गए।

जब वहाँ बची खुची सेना खड़ी थी तो अबू सुफ़यान ने बड़े ज़ोर से आवाज़ दी और कहा हमने मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को मार दिया। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलहि वसल्लम ने अबू सुफ़यान की बात का जवाब न दिया। जब इस्लामी सेना की ओर से इस बात का कोई जवाब न मिला तो अबू सुफ़यान को विश्वास हो गया कि उसका विचार ठीक है तथा उसने दावा किया कि हमने अबू बकर रज़ी. तथा उमर रज़ी. को भी मार दिया ..... अब काफ़िरों को विश्वास हो गया कि इस्लाम के संस्थापक को भी तथा उनके दाएँ बाजू को भी हमने मार दिया है। इस पर अबू सुफ़यान तथा उसके साथियों ने ख़ुशी से नारा लगाया ..... हमारे पूज्य बुत हुबल की शान बुलन्द हो कि उसने आज इस्लाम का विनाश कर दिया है। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. फ़रमाते हैं कि वही रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जो अपनी मौत की घोषणा पर, अबू बकर रज़ी. और उमर रज़ी. की मौत की घोषणा पर नसीहत फ़रमा रहे थे, ताकि ऐसा न हो कि ज़ख़्मी मुसलमानों पर फिर काफ़िरों की सेना लौट कर हमला न कर दे तथा मुट्ठी भर मुसलमान उसके हाथों शहीद हो जाएँ, अब जबकि ख़ुदा ए वाहिद की प्रतिष्ठा का सवाल पैदा हुआ तथा शिर्क का नारा मैदान में मारा गया तो आपकी रूह व्याकुल हो गई और आपने अत्यंत जोश के साथ सहाबा की ओर देख कर फ़रमाया- तुम लोग जवाब क्यूँ नहीं देते? सहाबा ने कहा- या रसूलुल्लाह स., हम क्या कहें? फ़रमाया- कहो तुम झूठ बोलते हो कि हुबल की शान बुलन्द हुई, यह झूठ है तुम्हारा। अल्लाह वहदहू ला शरीक ही प्रतिष्ठावान है तथा उसकी शान ही उच्चतम है। और इस तरह आपने अपने जीवित होने की ख़बर दुशमनों तक पहुंचा दी। इस दलेरी वाले तथा साहस पूर्ण उत्तर का प्रभाव काफ़िरों की सेना पर इतना गहरा पड़ा कि बावजूद इसके कि उनकी आशाएँ इस जवाब से धूल में मिल गईं तथा बावजूद इसके कि उनके सामने मुट्ठी भर मुसलमान खड़े हुए थे जिन पर हमला करके उनको मार देना भौतिक नियम के अनुसार पूर्णतः सम्भव था, वे पुनः हमला करने का साहस न कर सके तथा जितनी भी विजय उनको मिली थी उसी की ख़ुशियाँ मनाते हुए मक्का को वापस चले गए। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. ने विभिन्न दृष्टिकोणों से इस घटना को कई स्थानों पर बयान फ़रमाया है जो इन्शाअल्लाह आगे मैं बयान करूँगा।

हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया- इस समय जैसा कि मैं सामान्यतः दुआ के लिए कहता हूँ। फ़लिस्तीनियों के लिए दुआएँ जारी रखें। सुना है कि शायद ग़ाज़ा में तो युद्ध विराम की चेष्टा हो रही है, सम्भवतः इसराईली सरकार भी कुछ हद तक मान जाए किन्तु लबनान की सीमा के साथ युद्ध भड़कने की सम्भावना अधिक हो रही है तथा उसका प्रभाव जो है फिर वैस्ट बैंक के फ़लिस्तीनियों पर भी होगा। न्याय का कोई नामो निशान ही नहीं पश्चिम के देशों में। अब तो इनके अपने लिखने वाल और अधिक खुल कर लिखने लगे हैं कि अत्याचार की चरम सीमा है। अमरीका के लीडर केवल अपनो आर्थिक स्थिति बढ़ाने के लिए इन युद्धों को हवा दे रहे हैं तथा इसी कारण से उनकी आय बढ़ रही है, क्यूँकि उनके शस्त्रों के औद्योगिक संस्थान अधिक पैदावार दे रहे हैं। अब तो उनके अपने आलोचक भी यही कह रहे

हैं कि अमरीका अपनी अर्थव्यवस्था की उन्नति के लिए युद्ध को लम्बा करने का प्रयास कर रहा है तथा विश्व में फ़साद फैला रहा है। यह नहीं जानते कि ख़ुदा तआला की पकड़ से ये लोग बच नहीं सकते। अहमदी अतएव अपनी दुआओं तथा सम्पर्कों के द्वारा विनाश से बचने के लिए अपनी भूमिका अदा करें। पिछले दिनों यह ख़बर भी थी कि यू.एन. की जो ऐजन्सी है सहायता हेतु, अमरीका तथा यू.के. इत्यादि ने उन्हें आर्थिक सहायता देना बन्द कर दिया है, इंकार कर दिया है कि उनके गयारह अथवा बारह लोग हम्मास के साथ मिले हुए थे, इसके कारण से यह अत्याचार कि फ़लिस्तीनियों की सहायता न करो। यह इस लिए है कि उनको विवश कर दिया जाए और कुछ भी नहीं, परन्तु आश्चर्य इस बात पर है कि यदि पश्चिमी देशों ने सहायता बन्द की है तो यह कोई सूचना नहीं आ रही, क्यूँकि न ही तेल की सम्पदा रखने वाले मुस्लिम देशों ने यह घोषणा की है कि हम यह सहायता करेंगे, क्यूँकि यू.एन. ऐजन्सी ने तो घोषणा की है कि यदि सहायता न मिली तो फ़रवरी के बाद हम कोई सहायता नहीं पहुंचा सकते।

अतएव अल्लाह तआला इन मुस्लिम देशों को भी अपनी भूमिका अदा करने का सामर्थ्य प्रदान करे तथा दुनिया का फ़साद भी समाप्त हो, अब ईरान के साथ भी युद्ध की आशंका बढ़ रही है। इसी प्रकार यमन के अहमदियों के लिए भी दुआ करें। एक हमारे निष्ठावान अहमदी की भी वहाँ क़ैद अथवा हिरासत की स्थिति में इलाज सही न मिलने की अवस्था में वफ़ात भी हुई है। विस्तार पूर्वक जानकारियाँ तो कठिनाई से ही मिलती हैं, अतएव इन लोगों के लिए दुआ करें जो कठिनाईयों से ग्रस्त हैं। और अधिक विवरण मिलने पर इन्शाअल्लाह मरहूम का फिर जनाज़ा भी पढ़ाऊँगा।

पाकिस्तान के अहमदियों के लिए भी दुआ करें। अपने राजनीतिक लाभ के लिए सदैव अहमदियों को निशाना बनाया जाता है तथा इसी प्रकार कुछ कट्टर पंथी संगठनों से भी ख़तरा है, जमाअत को। जमाअत के लोगों का ख़तरा दोहरा हो जाता है हर जगह, एक नागरिक होने की दृष्टि से, दूसरा अहमदी होने की दृष्टि से। रबवा तथा अन्य नगरों के अहमदियों के लिए दुआ करें, अल्लाह तआला उनको अपनी सुरक्षा में रखे। उपद्रवियों की योजनाएँ उन पर उलटाए और अल्लाह तआला हर एक देश में अहमदियों की रक्षा फ़रमाए। दुनिया इस वास्तविकता को पहचान ले कि अल्लाह तआला की ओर पलटने के बिना कोई रास्ता शेष नहीं है इनको सलामती इसी में है कि अल्लाह को पहचानें तथा अल्लाह के भेजे हुए को मानें, अल्लाह तआला इनको इसकी तौफ़ीक़ दे।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ
يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ
وَرَسُوْلُهٗ. عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ
يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ.

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, समपर्क करें-9781831652

टोल फ्री सम्पर्क अहमदिया मुस्लिम जमाअत क़ादियान-18001032131